महर्षि दयानंद सरस्वती एवं तदुपरान्त आर्यसमाज द्वारा किए गए प्रमुख कार्य

- महर्षि दयानन्द सरस्वती ने १८७५ में बम्बई में की आर्यसमाज की स्थापना
- महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने वेदों का भाष्य किया।
- वेदज्ञान मनुष्यमात्र के ज्ञान का स्रोत की घोषणा
- क्रान्तिकारी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचना
- सैकड़ों पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन
- साहित्य क्षेत्र में करोड़ों पुस्तकों का किया प्रकाशन
- स्वराज्य एवं स्वदेश शब्दों की देन
- गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति की पुनर्स्थापना
- पाखंड अंधविश्वास के विरुद्ध जनजागरुकता में आर्यसमाज ने किया कार्य
- उर्दू-अंग्रेजी के स्थान पर संस्कृत एवं हिन्दी भाषा की पुनर्स्थापना
- हजारों क्रान्तिकारियों के प्रेरणास्रोत
- छूआछूत के विरुद्ध सफल अभियान का संचालन
- जाति विहीन समाज की स्थापना हेतु निरन्तर संघर्ष
- बाल विवाह का विरोध व विधवा विवाहों का प्रचलन
- स्त्री शिक्षा एवं स्त्री सम्मान का युगान्तरकारी अभियान
- गौ आधारित कृषि एवं आर्थिकी का प्रचार

सामाजिक कुरीतियों का विरोध

- जन्मना जातिवाद – छुआछूत
- बाल विवाह
- बहुविवाह
- सगोत्र विवाह
- सती प्रथा
- मृतक श्राद्ध - मृतक भोज
- पशु बलि
- नर बलि
- पर्दा प्रथा
- देवदासी प्रथा
- वेश्यावृत्ति
- शवों को दफनाना या नदी में बहाना
- मृत बच्चों को दफनाना
- समुद्र यात्रा के निषेध का खण्डन
- मांसाहार
- नशा
- तम्बाकू - धुम्रपान

समाज सुधार के कार्य की नींव

- कार्य के आधार पर वर्ण व्यवस्था का समर्थन
- अंतरजातीय विवाह
- दलितोद्धार
- विधवा पुनर्विवाह
- सबके लिए शिक्षा अभियान
- नारी सशक्तिकरण
- नारी को शिक्षा का अधिकार
- सबको वेद पढ़ने का अधिकार
- गुरुकुल शिक्षा पद्धति का आरम्भ
- प्रथम हिन्दू अनाथालय की स्थापना
- प्रथम गौशाला की स्थापना
- स्वदेशी आन्दोलन आरम्भ और संचालन
- प्रथम स्वदेशी बैंक की स्थापना, पंजाब नेशनल बैंक
- स्वदेशी विद्यालयों - डीएवी संस्थानों की स्थापना
- सेवा आश्रमों की स्थापना
- महिला आश्रमों की स्थापना
- छात्रावासों की स्थापना
- भारत से बाहर जाने वालों को वैदिक संस्कृति से जोड़े रखने का अभियान